इकाई-II

7. चुनौती हिमालय की

सोचिए-बोलिए

प्रश्नः

1. चित्र में क्या-क्या दिखायी दे रहा है?
2. चित्र में महिला क्या करती हुई दिखायी दे रही है?
3. आपके विचार में पहाड़ पर चढ़ना कैसा काम है?

छात्रों के लिए सूचनाएँः

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। कठिन शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. नये शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. नये शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

SCERT TELANGANA

जोज़ीला पास से आगे चलकर जवाहरलाल मातायन पहुँचे तो वहाँ के नवयुवक कुली ने बताया, ''शाब, सामने उस बर्फ़ से ढके पहाड़ के पीछे अमरनाथ की गुफा है।''

''लेकिन, शाब, रास्ता बहुत टेढ़ा है। '' किशन ने कुली की बात काटी। ''बहुत चढ़ाई है। और शाब, दूर भी है।''

''कितनी दूर?'' जवाहरलाल ने पूछा।

''आठ मील, शाब'' कुली ने जल्दी से उत्तर दिया।

''बस ! तब तो ज़रूर चलेंगे।'' जवाहरलाल ने अपने चचेरे भाई की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। दोनों कश्मीर घूमने निकले थे और जोज़ीला पास से होकर लद्दाखी इलाके की ओर चले आए थे। अब अमरनाथ जाने में क्या आपत्ति हो सकती थी? फिर जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

''कौन-कौन चलेगा हमारे साथ?'' जवाहरलाल ने जानना चाहा।

तुरंत किशन बोला, शाब मैं चलूँगा। भेड़ें चराने मेरी बेटी चली जाएगी।''

अगले दिन सुबह तड़के तैयार होकर जवाहरलाल बाहर आ गए। आकाश में रात्रि की कालिमा पर प्रातः की लालिमा फैलती जा रही थी। तिब्बती पठार का दृश्य निराला था। दूर-दूर तक वनस्पति-रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। उदास, फीके, बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ सुबह की पहली किरणों का स्पर्श पाकर ताज की भाँति चमक उठे। दूर से छोटे-छोटे ग्लेशियर ऐसे लगते, मानो स्वागत करने के लिए पास सरकते आ रहे हों। सर्द हवा के झोंके हड्डियों तक को ठंडक पहुँचा रहे थे।

जवाहर ने हथेलियाँ आपस में रगड़कर गरम कीं और कमर में रस्सी लपेट कर चलने को तैयार हो गए। हिमालय की दुर्गम पर्वतमाला मुँह उठाए चुनौती दे रही थी। जवाहर इस चुनौती को कैसे न स्वीकार करते। भाई, किशन और कुली सभी रस्सी के साथ जुड़े थे। किशन गड़ेरिया अब गाइड बन गया।

SCERT TELANGANA

बस आठ मील ही तो पार करने हैं। जोश में आकर जवाहरलाल चढ़ाई चढ़ने लगे। यूँ आठ मील की दूरी कोई बहुत नहीं होती। लेकिन इन पहाड़ी रास्तों पर आठ कदम चलना दूभर हो गया। एक -एक डग भरने में कठिनाई हो रही थी।

रास्ता बहुत ही वीरान था। पेड़-पौधों की हरियाली के अभाव में एक अजीब खालीपन-सा महसूस हो रहा था। कहीं एक फूल दिख जाता तो आँखों को ठंडक मिल जाती। दिख रही थीं सिर्फ़ पथरीली चट्टानें और सफ़ेद बर्फ़। फिर भी इस गहरे सन्नाटे में बहुत सुकून था। एक ओर सूँ-सूँ करती बर्फ़ीली हवा बदन को काटती तो दूसरी ओर ताज़गी और स्फूर्ति भी देती।

जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों-त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी । एक कुली की नाक से खून बहने लगा। जल्दी से जवाहरलाल ने उसका उपचार किया। खुद उन्हें भी कनपटी की नसों में तनाव महसूस हो रहा था, लगता था जैसे दिमाग में खून चढ़ आया हो। फिर भी जवाहरलाल ने आगे बढ़ने का इरादा नहीं बदला।

थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। फिसलन बढ़ गई, चलना भी कठिन हो गया। एक तरफ़ थकान, ऊपर से सीधी चढ़ाई। तभी सामने एक बर्फ़ीला मैदान नज़र आया। चारों ओर हिम शिखरों से घिरा वह मैदान देवताओं के मुकुट के समान लग रहा था। प्रकृति की कैसी मनोहर छटा थीं आँखों और मन को तरोताज़ा कर गई। बस एक झलक दिखाकर बर्फ़ के धुँधलके में ओझल हो गई।

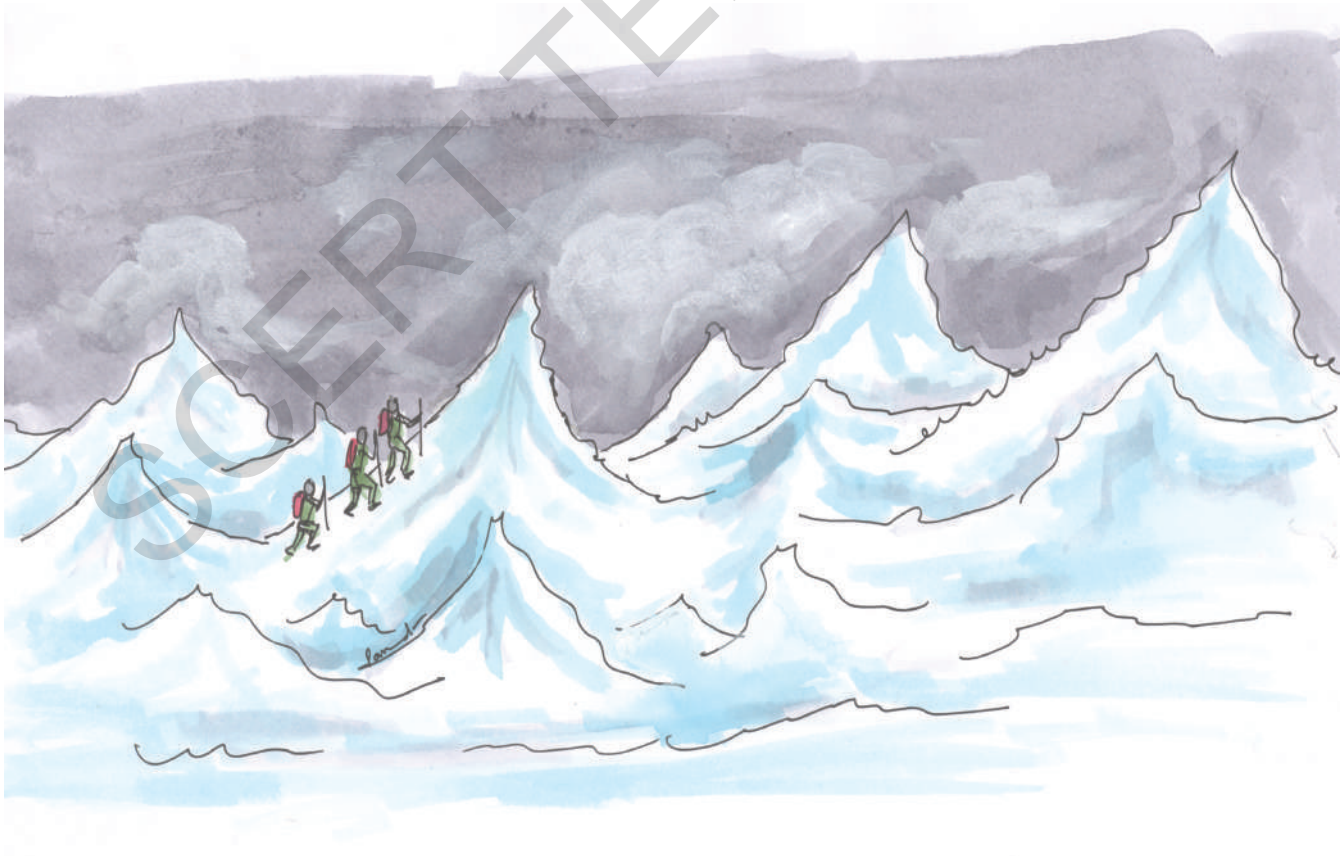

SCERT TELANGANA

दिन के बारह बजने वाले थे। सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर होंगे इस वक्त...अमरनाथ से भी ऊपर। पर अमरनाथ की गुफा का दूर-दूर तक पता नहीं था । इस पर भी जवाहरलाल की चाल में न ढीलापन था, न बदन में सुस्ती। हिमालय ने चुनौती जो दी थी । निर्गम पथ पार करने का उत्साह उन्हें आगे खींच रहा था।

''शाब, लौट चलिए। वापस कैंप में पहुँचते -पहुँचते दिन ढल जाएगा,'' एक कुली ने कहा।

''लेकिन अभी तो अमरनाथ पहुँचे नहीं।'' जवाहरलाल को लौटने का विचार पसंद नहीं आया।

''वह तो दूर बर्फ़ के मैदान के पार है.'' किशन बीच में बोल पडा।

''चलो, चलो चढ़ाई तो पार कर ली, अब आधे मील का मैदान ही तो बाकी है, '' कहकर जवाहरलाल ने थके हुए कुलियों को उत्साहित किया।

सामने सपाट बर्फ़ का मैदान दिखाई दे रहा था। उसके पार दूसरी ओर से नीचे उतरकर गुफा तक पहुँचा जा सकता था। जवाहरलाल फुर्ती से बढ़ते जा रहे थे। दूर से मैदान जितना सपाट दिख रहा था। असलियत में उतना ही ऊबड़-खाबड़ था। ताज़ी बर्फ़ ने ऊँची-नीची चट्टानों को एक पतली चादर से ढक कर एक समान कर दिया था। गहरी खाइयाँ थीं, गड्ढे बर्फ़ से ढके हुए थे और गज़ब की फिसलन थी। कभी पैर फिसलता और कभी बर्फ़ में पैर अंदर धँसता जाता, धँसता जाता। बहुत नाप-नाप कर कदम रखने पड़ रहे थे। ये तो चढ़ाई से भी मुश्किल था, पर जवाहरलाल को मज़ा आ रहा था। तभी जवाहरलाल ने देखा सामने एक गहरी खाई मुँह फाड़े निगलने के लिए तैयार थी। अचानक उनका पैर फिसला। वे लड़खड़ाए और इससे पहले कि सँभल पाएँ वे खाई में गिर पड़े।

''शाब.....गिर गए !'' किशन चीखा।

''जवाहर ...''भाई की पुकार वादियों की शांति भंग कर गई। वे खाई की ओर तेज़ी से बढ़े।

रस्सी से बँधे जवाहरलाल हवा में लटक रहे थे । उफ़, कैसा झटका लगा। दोनों तरफ़ चट्टानें-ही-चट्टानें, नीचे गहरी खाई। जवाहरलाल कसकर रस्सी पकड़े थे, वही उनका एकमात्र सहारा था।
''जवाहर''...! ऊपर से भाई की पुकार सुनाई दी।
मुँह ऊपर उठाया तो भाई और किशन के धुँधले चेहरे खाई में झाँकते हुए दिखाई दिए। ''हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना,'' भाई ने हिदायत दी।

जवाहरलाल जानते थे कि फिसलन के कारण यूँ ऊपर खींच लेना आसान नहीं होगा। ''भाई, मैं चट्टान पर पैर जमा लूँ,'' वह चिल्लाए। खाई की दीवारों से उनकी आवाज़ टकराकर दूर-दूर तक गूँज गई। हल्की-सी पेंग बढ़ा जवाहरलाल ने खाई की दीवार से उभरी चट्टान को मजबूती से पकड़ लिया और पथरीले धरातल पर पैर जमा लिए। पैरों तले धरती के एहसास से जवाहरलाल की हिम्मत बढ़ गई।

SCERT TELANGANA

''घबराना मत, जवाहर,'' भाई की आवाज़ सुनाई दी।

''मैं बिल्कुल ठीक हूँ,'' कहकर जवाहरलाल मज़बूती से रस्सी पकड़ एक-एक कदम ऊपर की ओर बढ़ने लगे । कभी पैर फिसलता, कभी कोई हल्का-फुल्का पत्थर पैरों के नीचे सरक जाता, तो वह मन-ही-मन काँप जाते और मज़बूती से रस्सी पकड़ लेते। रस्सी से हथेलियाँ भी जैसे कटने लगीं थी पर जवाहरलाल ने उस तरफ़ ध्यान नहीं दिया। कुली और किशन उन्हें खींचकर बार-बार ऊपर चढ़ने में मदद कर रहे थे। धीरे-धीरे सरक कर किसी तरह जवाहरलाल ऊपर पहुँचे। मुड़कर ऊपर से नीचे देखा कि खाई इतनी गहरी थी कि कोई गिर जाए तो उसका पता भी न चले।

''शुक्र है, भगवान का!'' भाई ने गहरी साँस ली।

''शाब, चोट तो नहीं आई? एक कुली ने पूछा।

गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गए। इस हादसे से हल्का-सा झटका ज़रूर लगा फिर भी जोश ठंडा नहीं हुआ। वह अब भी आगे जाना चाहते थे।

आगे चलकर इस तरह की गहरी और चौड़ी खाइयों की तादाद बहुत थी। खाइयाँ पार करने का उचित सामान भी तो नहीं था। निराश होकर जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़कर वापस लौटना पड़ा। अमरनाथ पहुँचने का सपना तो पूरा ना हो सका पर हिमालय की ऊँचाइयाँ सदा जवाहरलाल को आकर्षित करती रहीं।

सुरेखा पणंदीकर

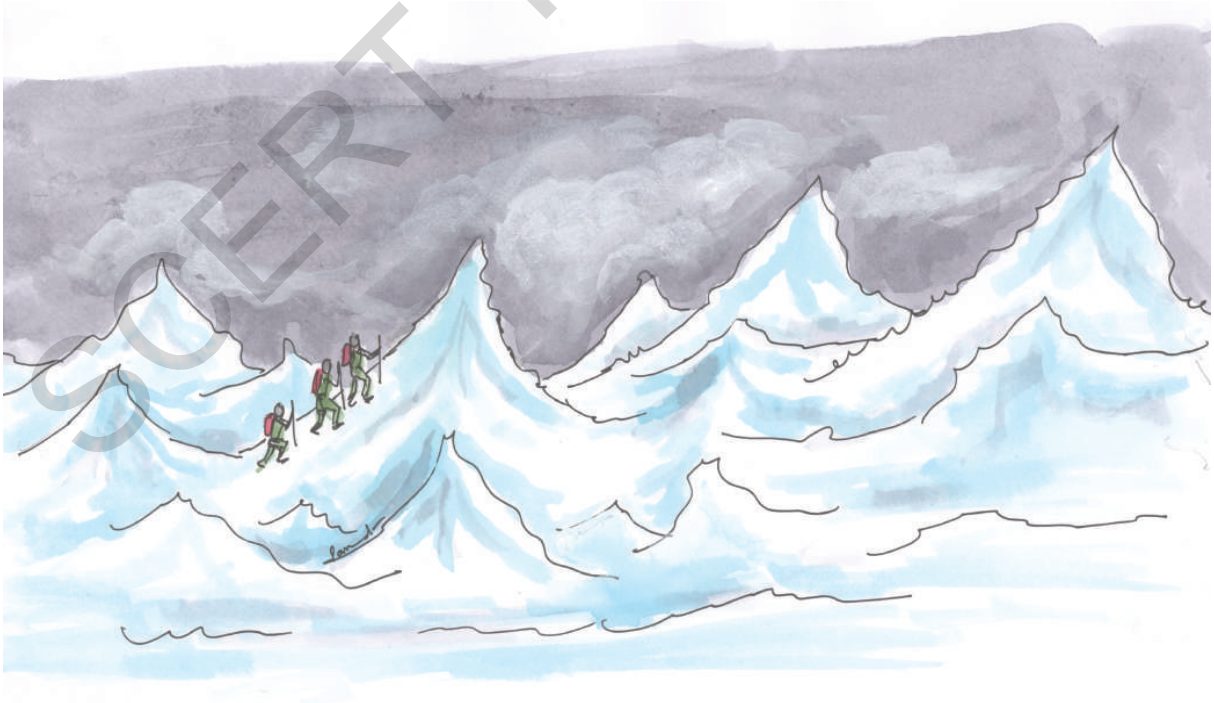

SCERT TELANGANA

लद्दाख जम्मू-कश्मीर राज्य में है। ऊपर दिये भारत के नक्शे में देखकर बताइए कि आपका घर कहाँ है व किस राज्य में है ?

SCERT TELANGANA

सुनिए-बोलिए

1. आप जहाँ रहते हैं वहाँ से लद्दाख पहुँचने में कितने दिन लग सकते हैं और वहाँ किन-किन ज़रियों से पहुँचा जा सकता है? बताइए।
2. आपके द्वारा की गई किसी यात्रा के बारे में बताइए।
3. पर्वतों के बारे में आप अपनी या किसी और की लिखी हुई कविता सुनाइए।

पढ़िए

I. पाठ पढ़िए और लिखिए कि निम्नलिखित संज्ञा शब्दों के साथ किन विशेषणों का प्रयोग हुआ है।

1. ....चट्टानें **5.** ....पथ

2...................बर्फ़ **6.** ....चेहरे

3. ....हवा **7.** ....इलाका

4. ....खाई **8.** ....पर्वतमाला

II. नीचे दिए गये वाक्यों को पाठ के आधार पर सही क्रम दीजिए।

1. गर्दन हिला, कपड़े झाड़ जवाहरलाल फिर चलने को तैयार हो गये। (   )

2. हम खींच रहे हैं, रस्सी कस के पकड़े रहना। (   )

3. रास्ता बहुत वीरान था। (   )

4. शाब, लौट चलिए। (   )

5. थोड़ी देर में बर्फ़ पड़ने लगी। (   )

SCERT TELANGANA

III. पाठ पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए ।

1. जवाहरलाल, किशन और कुली सभी रस्सी से क्यों बँधे थे?

2. जवाहरलाल बढ़ते जा रहे थे । ज्यों-ज्यों ऊपर चढ़ते गए, त्यों-त्यों साँस लेने में दिक्कत होने लगी । जवाहरलाल और उनके साथियों को और कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा?

IV. निम्नलिखित पंक्तियों के आधार पर कोई (तीन) प्रश्न तैयार कीजिए ।

दिन के बारह बजने वाले थे, सुबह चार बजे से वे लोग लगातार चढ़ाई कर रहे थे। शायद सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर होंगे उस वक्त ।

लिखिए

1. जवाहरलाल को अमरनाथ तक का सफ़र अधूरा छोड़ना पड़ा था। आप उनकी जगह होते तो क्या यात्रा अधूरी छोड़ते, क्यों?

2. बर्फ़ से ढके चट्टानी पहाड़ों के उदास और फीके लगने की क्या वजह हो सकती थी? वहाँ के वातावरण का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

3. पाठ में नेहरु जी ने हिमालय से चुनौती महसूस की? उन्होंने इसे चुनौती क्यों माना होगा? सोचकर लिखिए। आप भी क्या इसे एक चुनौती मानते हैं? क्यों?

शब्द भंडार

1. ''चुनौती हिमालय की'' इस पाठ से संबंधित शब्दों को इस वर्ग पहेली से चुनकर लिखिए।

प	र्व	त	मा	ला	ज
हा	ग	खा	ठं	वा	ता
ड़	र	ई	ह	ड़	ज़ी
अ	म	र	ना	थ	क
ह	थे	लि	याँ	ब	फ़

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....
5. .....

SCERT TELANGANA

2. जवाहरलाल रास्ते की मुश्किलों के बारे में सुनकर सफ़र के लिए और भी उत्सुक हो गए।

- 'उत्सुक' शब्द का समानार्थी शब्द लिखकर उससे वाक्य बनाइए।

- 'सफ़र' शब्द का पर्याय लिखकर उससे वाक्य बनाइए।

- 'मुश्किल' शब्द का विलोम लिखकर नया वाक्य लिखिए।

3. दूर-दूर तक वनस्पति-रहित उजाड़ चट्टानी इलाका दिखाई दे रहा था। रास्ता बहुत ही वीरान था। उपर्युक्त वाक्यों में आए समानार्थी शब्दों को चुनिए और उनसे दो वाक्य लिखिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

कल्पना कीजिए कि अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स अपनी अंतरिक्ष यात्रा पूरी करके आ चुकी हैं। आप उनका साक्षात्कार लेना चाहते हैं। इसके लिए आप एक प्रश्नावली तैयार कीजिए।

प्रशंसा

आपके भाई ट्रेकिंग (पहाड़ पर चढ़ना) करके घर लौट आए हैं। ट्रेकिंग की विशेषता के बारे में चार वाक्य लिखिए ।

भाषा की बात

1. आकाश में रात्रि की कालिमा पर प्रातः की लालिमा फैलती जा रही थी।

इस वाक्य में विशिष्टता बताने वाले शब्दों को छाँटकर लिखिए।

'कालिमा' और 'लालिमा' शब्द रात्रि और प्रातः की विशेषता बता रहे हैं।
संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

- इसी प्रकार रंगों से जुड़े कोई पाँच विशेषण शब्द लिखिए।

जैसे : सफेद बर्फ़

SCERT TELANGANA

2. जॉन पुस्तक पढ़ता है ।

सुरेश मकान बनाता है ।

रज़िया भोजन बनाती है ।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए। पहले वाक्य में 'जॉन' कर्ता है, दूसरे में 'मकान' कर्म है और तीसरे में 'बनाती' क्रिया है। इसी प्रकार के अन्य वाक्य बनाइए। उन वाक्यों में आये कर्ता, कर्म और क्रिया को तालिका के रूप में लिखिए।

परियोजना कार्य

कोलाज उस तस्वीर को कहते हैं जो कई तस्वीरों को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर एक कागज पर चिपका कर बनाई जाती है। आप सब मिलकर पहाड़ों का एक कोलाज़ बनाइए। इसके लिए पहाड़ों से जुड़ी विभिन्न तस्वीरें इकट्ठा कीजिए। पर्वतारोहण, चट्टान, पहाड़ों के अलग-अलग नज़ारें, चोटी, अलग-अलग किस्म के पहाड़। अब उन्हें एक बड़े से कागज़ पर पहाड़ के आकार में ही चिपकाइए। चित्रों पर आधारित शब्दों का एक कोलाज बनाइए। कोलाज में ऐसे शब्द हों जो इन चित्रों का वर्णन कर पा रहे हों या मन में उठने वाली भावनाओं को बता रहे हों। अब इन दोनों कोलाजों को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। भाव बता सकता/सकती हूँ। 2. इस तरह के पाठ पढ़कर समझ सकता/सकती हूँ। 3. पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिख सकता/सकती हूँ। 4. पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ। 5. पाठ के आधार पर किसी यात्रा के बारे में लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

मेरी दैनिकी

उपवाचक

अभिजीत को दशहरे की छुट्टियाँ थीं। हर साल दशहरे की छुट्टियों में वह कहीं-न-कहीं घूमने जाता था। वह जहाँ भी घूमने जाता, वहाँ के अनुभव अपनी दैनंदिनी (डायरी) में अवश्य लिखता और जब कभी ऊब जाता, डायरी के इन पन्नों को पढ़कर पुरानी यादें ताजा कर लेता। अभिजीत के भैया मनोहर बासर में आई.आई.आई.टी. कॉलेज में बी.टेक की पढ़ाई कर रहे थे। बासर आदिलाबाद जिले में है। एक बार अभिजीत अपनी बहन स्नेहा के साथ उनसे मिलने बासर गया । आइए! हम अभिजीत की डायरी के कुछ पन्ने पढ़ें, जो उसने पिछली यात्रा के दिनों में लिखे थे।

15/10/2012

मैं और स्नेहा सुबह जल्दी नहा धोकर तैयार हो गये। स्नेहा बहुत ही उत्साहित नज़र आ रही थी क्योंकि वह पहली बार रेलगाड़ी में बैठ रही थी। एक बजे तक हमें सिकंदराबाद स्टेशन पर पहुँचना था। हमने नाश्ता किया, सूटकेस में कपड़े रखे और ऑटो से स्टेशन पहुँच गये। हमें मुंबई जाने वाली देवगिरी एक्सप्रेस पकड़नी थी। ठीक सवा बजे गाड़ी स्टेशन पर आ खड़ी हुई। हम भी गाड़ी में बैठ गये। डेढ़ बजे गाड़ी चल दी । ट्रेन तेज़ी से दौड़ रही थी । हमने पेड़, पहाड़ों, घरों को दौड़ते हुए देखा। धीरे-धीरे हमारी ट्रेन 'कामारेड्डी' के घने जंगलों को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी। दोपहर का समय होने के कारण स्नेहा को नींद आ रही थी किन्तु वह सुंदर दृश्यों को छोड़ना नहीं चाहती थी, इसलिए वह नींद भगाने का भरसक प्रयत्न कर रही थी।

अगले स्टेशन पर गाड़ी रुकी। हमने चाय पी। बासर आने ही वाला था। हम बेसब्री से बासर आने की प्रतीक्षा करने लगे। चार घंटे के सफ़र के पश्चात हम बासर पहुँचे। मनोहर भैया प्रतीक्षा में खड़े थे। हमें देखकर बहुत खुश हुए। हम उनके कमरे पर गये। उन्होंने दूसरे दिन 'बासर' के प्रसिद्ध मंदिर को ले जाने का वादा किया। उसके बाद हम सब सो गये।

SCERT TELANGANA

16/10/2012

दूसरे दिन आठ बजे हम गोदावरी नदी के किनारे पहुँचे। गोदावरी के स्वच्छ जल को देखकर मेरी तैरने की इच्छा हुई। किन्तु भैया ने मुझे रोक दिया। हमने मुँह हाथ धोये और 'सरस्वती मंदिर' के दर्शन के लिए निकल पड़ें। बासर 'व्यासपुर' का अपभ्रंश रूप है। महाभारत और भागवत की रचना करने वाले वेद व्यास जी ने इस क्षेत्र को बसाया था, इसलिए इसका नाम 'व्यासपुर' पड़ा। बाद में यह व्यासपुर से 'बासर' हो गया। 'बासर' की लोकप्रियता का प्रमुख कारण यहाँ का विश्वप्रसिद्ध सरस्वती मंदिर है। मनोहर भैया ने बताया कि यहाँ बच्चों को अक्षराभ्यास करवाने की प्रथा है। मैंने,स्नेहा और मनोहर भैया ने मंदिर में 'सरस्वती देवी' की मूर्ति के दर्शन किये। माँ से विद्या प्राप्ति के लिए आशीर्वाद लेकर हम बाहर निकल आये। मंदिर के बाहर कृत्रिम प्रपात दिखाई पड़ा। पास ही एक तंग गुफा थी। स्नेहा को छोटी-छोटी पहाड़ियों पर चढ़ने-उतरने में मज़ा आ रहा था। कुछ देर वहाँ खेलने के बाद हमने पास के होटल में भोजन किया। वहाँ से मनोहर भैया हमें 'वेदवती शिला' दिखाने ले गये। गाँव के बस-स्टॉप के पास एक बड़ी शिला घड़े के आकार में खड़ी थी। इस शिला की अपनी अलग ही विशेषता थी। इस शिला पर पत्थर की चोट करने और चोट पर कान लगाकर सुनने पर हर जगह से अलग-अलग बर्तनों की आवाज़ें आ रही थीं। स्नेहा को यह बड़ा अजीब लग रहा था। वह बार-बार शिला पर पत्थर से चोट करती, अलग-अलग आवाज़ें सुनती और खिलखिला कर हँस पड़ती। बड़ी मुश्किल से मैं और मनोहर भैया उसे वहाँ से हटाकर ले आये। फिर मनोहर भैया ने हमें उनका आई.आई.आई.टी. कॉलेज दिखाया।

वहाँ से हम वापस अपने कमरे पर आ गये क्योंकि शाम को ही हमें हैदराबाद के लिए निकलना था। गोदावरी नदी की कल-कल आवाज़ों के बीच से गुज़रते हुए हम हैदराबाद वापस आ गये।

SCERT TELANGANA